

CSIR IN MEDIA



CSIR

NEWS BULLETIN

26 TO 30 SEPTEMBER 2020



Three researchers get CDRI Award for drug discovery

CSIR-CDRI



30th September, 2020
efficient cell-penetrating peptides which has tremendous implications in medicine as it enables drug delivery inside a cell. For outstanding work in the field of chemical sciences, Dr Ravi Manjithaya received CDRI Award 2020 in chemical sciences. He is presently working as associate professor at Jawaharlal Nehru Centre for Advanced Scientific Research, Bengaluru.

Three young researchers were given the CDRI Award 2020 on Tuesday for their exemplary contribution to drug discovery and development. CSIR-Central Drug Research Institute (CDRI) awarded Bushra Ateeq in biological sciences for conducting excellent research and drug discovery for the treatment of pancreatic cancer. Ateeq is an associate professor and a senior fellow of the Wellcome Trust/DBT India Alliance in the department of biological sciences and bioengineering at IIT-Kanpur. Another young scientist to be awarded in the field of biological sciences was Prof Surajit Ghosh in the department of bioscience and bioengineering at IIT-Jodhpur. Ghosh was awarded for the development of

Published in:
[The Times of India](#)

तीन युवा वैज्ञानिकों को सीडीआरआई का प्रतिष्ठित पुरस्कार

लखनऊ। तीन युवा वैज्ञानिकों को कैंसर की अनुसंधानी गुंथी सुलझाने के लिए सीडीआरआई पुरस्कार 2020 से सम्मानित किया गया है। पुरस्कृत होने वाली में युवा शोधकर्ता डॉ. बुररा अतीक, डॉ. सुरजित घोष और डॉ. रवि मंजीठक शामिल हैं। भारत में औषधि अनुसंधान एवं विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 2004 में सीडीआरआई अकादमी की स्थापना की गई थी। ये पुरस्कार 45 वर्ष से कम आयु के वैज्ञानिकों को दिए जाते हैं। प्रत्येक पुरस्कार में 20,000 रुपये का नकद व एक प्रशस्तिपत्र दिया जाता है। अब तक 34 वैज्ञानिक इस पुरस्कार से सम्मानित किए जा चुके हैं। इस वर्ष के विजेताओं में से डॉ. बुररा अतीक को भी मेडिकल साइंसेज का इस वर्ष का शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार हाल ही में मिला है। ऑनलाइन समारोह में निदेशक प्रोफेसर तपस कुंडु ने विजेताओं को बधाई दी एवं भविष्य में औषधि अनुसंधान को नई दिशा देने के लिए आह्वान किया। कार्यक्रम का सोधा प्रसारण संस्थान के यूट्यूब चैनल के माध्यम से किया गया एवं सभी प्रतिभागी एमएस टीम के माध्यम से कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

कैंसर की अनुसंधानी गुंथी सुलझाने में सफल अनुसंधान के लिए दिया गया सम्मान

प्रोस्टेट कैंसर के चिकित्सकीय समाधान को नई दिशा देने के लिए पुरस्कृत



जैविक विज्ञान (लाइफ साइंसेज) के क्षेत्र में सीडीआरआई अवार्ड-2020 विजेता, डॉ. बुररा अतीक वर्तमान में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर के बायोमेडिकल साइंसेज एवं बायो इंजीनियरिंग विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर और बेलकम ट्रस्ट/डीबीटी इंडिया एलार्गंस की वरिष्ठ फैलो के रूप में कार्यरत हैं। उनका शोध, एंडोक्राइन डिग्रेडेशन क्षमता के पश्चात होने वाले विशिष्ट रोगों की चिकित्सा करता है। साथ ही प्रोस्टेट कैंसर के उपचार के लिए एक नई सहायक रणनीति के बारे में बताता है।

सीपीपी का कैंसररोधी औषधि के रूप में भूमिका का पता लगाया



प्रभावी सेल पेनेट्रेंटिंग पेप्टाइड (कोशिका पेटक पेप्टाइड्स/ सीपीपी) का औषधि के रूप में जबरदस्त प्रभाव है। डॉ. सुरजित घोष को इसके विकास हेतु इस वर्ष का सीडीआरआई अवार्ड प्राप्त हुआ। डॉ. घोष वर्तमान में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर में बायोसाइंस और बायो इंजीनियरिंग विभाग में प्रोफेसर के रूप में कार्यरत हैं। अपने शोध के माध्यम से उन्होंने सेल पेनेट्रेशन में दो मुख्य अम्लो एसिड, जैसे आर्जिनिन एवं ट्रिप्टोफेन की भूमिका के बारे में बताया।

कैंसर सहित अनेक रोगों के कारणों पर किया काम



डॉ. रवि मंजीठक को रासायनिक विज्ञान में सीडीआरआई पुरस्कार 2020 प्राप्त हुआ है। वे वर्तमान में जवाहरलाल नेहरू सेंटर फॉर एडवांस्ड साइंटिफिक रिसर्च, बंगलूरु में एसोसिएट प्रोफेसर के रूप में कार्यरत हैं। उन्होंने अपने शोध में इसका पता लगाया कि किस तरह से शारीरिक प्रक्रिया में संतुलन बिगड़ने पर विभिन्न रोग पनपते हैं।

Fatty liver main cause of various health complications: Doc

PNS ■ LUCKNOW

A s fatty liver is the main cause of various health complications, including diabetes, heart disease and hypertension, enzyme level in the blood serum must be less than 30 IU/L in male and less than 20 IU/L in female and liver fat less than 5% to keep the liver healthy.

This was stated by director of Institute of Liver and Biliary Sciences, New Delhi, Dr Shiv Kumar Sarin, who delivered an online oration at Central Drug Research Institute's 79th CSIR Foundation Day celebrations on Monday.

Dr Sarin delivered an informative talk on 'Heart of the liver' to spread awareness regarding the importance of liver health for happy, healthy and long life. He said Alanine Aminotransferase (ALT) is an enzyme made in liver.

"It is released into the blood when tissues are damaged. This enzyme is also called serum glutamic-pyruvic transaminase (SGPT). This enzyme is the indicator of liver health so by observing the level of this parameter, people can keep themselves

updated with their liver health," he said.

CDRI director TK Kundu said that CSIR, which was established in 1942, has contributed significantly to the growth of science, industry and nation building.

On the occasion of CSIR Foundation Day, Dr Mridula Kamboj Award for Drugs, Diagnostics, Vaccines and Related Basic Research was announced and it would be given to Dr T Narender and his team for their outstanding contribution for developing a phytopharmaceutical for management of benign prostate hyperplasia (BPH), which is also called prostate gland enlargement, a common condition as men get older. An enlarged prostate gland can cause uncomfortable urinary symptoms, such as blocking the flow of urine out of the bladder. It can also cause bladder, urinary tract or kidney problems. He will be felicitated on CDRI Annual Day in February next year.

The institute is celebrating 70th year of its establishment this year. On the occasion, the CDRI director released 70th year's celebration logo.

Published in:
The Pioneer

लिवर रखें फिट, होगी लम्बी आयु : डा. सरीन

लखनऊ (एसएनबी)। स्वस्थ, प्रसन्न और लंबे जीवन के लिए लिवर (यकृत) को स्वस्थ रखना जरूरी है। यह बात सोमवार को सेंट्रल ड्रग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीडीआरआई) द्वारा आयोजित 79वें सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित इंस्टीट्यूट ऑफ लिवर एंड बायलरी साइंसेज, नई दिल्ली में निदेशक प्रो. शिव कुमार सरीन ने ऑनलाइन संबोधित करते हुए कही। इस दौरान उन्होंने लिवर के स्वास्थ्य के महत्व के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए 'हार्ट ऑफ द लिवर' पर रोचक तरीके से जानकारी साझा की।

फाउंडेशन डे ऑरिशन (स्थापना दिवस व्याख्यान) में मुख्य अतिथि ने जोर दिया कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने लिवर की चर्बी या वसा की मात्रा को नियंत्रित करते हुए लगभग पाँच फीसदी से कम रखनी चाहिए। फैटी लीवर, मधुमेह, हृदय रोग और उच्च रक्तचाप सहित विभिन्न गंभीर बीमारियों का मुख्य कारण है। लिवर को स्वस्थ रखने के लिए

रक्त सीरम में एलटी/एसजीपीटी एंजाइम जिन्हें एलानिन एमिनोट्रांसफरेज/सीरम ग्लूटामिक-पाइरूविक ट्रांसअमाइनेज भी कहा जाता है, का स्तर पुरुष में 30 आईयू/एल से कम तथा स्त्री में 20 आईयू/एल से

कम होना चाहिए। यह एंजाइम लिवर के ऊतकों के क्षतिग्रस्त होने पर रक्त में छोड़ा जाता है। यह एंजाइम लिवर स्वास्थ्य का सूचक है इस पैरामीटर के स्तर को देखकर कोई भी

व्यक्ति अपने लिवर के स्वास्थ्य के प्रति अपडेट रह सकता है। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य को खरीद नहीं जा सकता इसे प्राप्त करने के लिए प्रयास करके पाना होता है।

समारोह के अवसर पर ड्रग्स, डायग्नोस्टिक्स, वैक्सीन एवं संबंधित बुनियादी

अनुसंधान के लिए डा. मृदुला काम्बोज पुरस्कार की घोषणा की गई। इस वर्ष का पुरस्कार डा. टी. नरेंद्र और उनकी टीम को बिनाइन प्रोस्टेट हाइपरप्लासीया (प्रोस्टेट ग्रंथि का बढ़ना) के

प्रबंधन के लिए फाइटोफार्मास्युटिकल के विकास के लिए दिया जाएगा। डा. टी. नरेंद्र को फरवरी-2021 में

सीडीआरआई वार्षिक दिवस पर सम्मानित किया जाएगा।

सीडीआरआई इस वर्ष अपनी स्थापना का 70 वां वर्ष मना रहा है। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक ने संस्थान के 70 वें वर्ष के समारोह का लोगो जारी किया। इस अवसर पर संस्थान की वार्षिक रिपोर्ट 2019-20 के हिंदी संस्करण के अलावा संस्थान के न्यूजलेटर : बिट्स एंड

बाइट्स के नए संस्करण का भी विमोचन किया गया तथा एक ई-बुकलेट 'लिविंग विद कोविड-19' एक्सपीरियंस एंड फाइट अगैस्ट पेंडेमिक का भी विमोचन किया गया।

इस दौरान सीडीआरआई के कर्मचारियों तथा उनके प्रतिभाशाली बच्चों को सम्मानित किया गया, साथ ही संस्थान के वह सहयोगी जो विगत वर्ष सेवानिवृत्त हुए हैं तथा जिन्होंने सीएसआईआर में 25 वर्ष की सेवा अवधि पूरी की है, उन्हें सम्मानित किया गया।

संस्थान के निदेशक प्रो. तपस कुमार कुंडू ने अतिथियों का स्वागत किया तथा कहा कि हम सीएसआईआर का एक अंग होने पर गर्व महसूस करते हैं, जिस संगठन को 1942 में स्थापित किया गया और जिसने भारतीय विज्ञान और उद्योग के विकास एवं राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। कार्यक्रम का समापन सभापति, आयोजन समिति डा. प्रेमप्रकाश यादव द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ किया गया।



प्रो. एसके सरीन व डॉ. टी. नागेन्द्र



CSIR-IICT scientist gets prestigious award

CSIR-IICT



29th September, 2020
Hyderabad. Later, he went to The University of Kansas, USA for post-doctoral studies. After returning from USA, he joined CSIR-IICT, Hyderabad as a Scientist. Recently, he was awarded CSIR-IICT Young Scientist Award for the year 2018.

Dr Rambabu Chegondi, Senior Scientist, CSIR-Indian Institute of Chemical Technology (CSIR-IICT), Hyderabad was awarded the prestigious Dr A V Rama Rao Young Scientist Award-2019 for his significant research contributions in the area of organic chemistry. A cash award of Rs 50,000 is equally shared by Dr Rambabu and other awardee, Dr. Santanu Mukherjee, Associate Professor, Department of Organic Chemistry, Indian Institute of Science (IISc), Bengaluru. The award is sponsored every year by AVRA Foundation, AVRA Laboratories, Hyderabad. Dr Rambabu Chegondi received his M.Sc. degree from University of Hyderabad and completed Ph D in Organic Chemistry from CSIR-IICT,

Published in:
[Telangana Today](#)

CSIR-CEERI

29th September, 2020

खंडानु | मंगलवार, 29 सितंबर, 2020 | 01

नए कीर्तिमान रचने की जिद - अपने आठ आविष्कारों के चूले देश में पहले स्थान पर रहा पिलानी का सीरी संस्थान माइक्रोचिप से लेकर चंद्रयान के साउंड सेंसर तक सीरी पिलानी ने बनाए, अब 47 नए प्रोजेक्ट पर चल रहा काम

आत्मनिर्भर भारत

ऐनक भास्कर में गहरी जल पवित्र केंद्रों इलेक्ट्रॉनिकी अनुसंधान संस्थान (सीरी) के डिप्टी चीफ पीसी पंचांगिया की रिपोर्ट: कैसे संस्थान ने देश को इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों में आत्मनिर्भर बनवाया

खंडानु | यह 1953 की बात है। जब केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिकी अनुसंधान संस्थान (सीरी) की पिलानी में नींव रखी गई। तब तमाम तरह के इलेक्ट्रॉनिक उपकरण और उनके छोटे छोटे घटकों का प्रतिशत रूप से विदेशों से आने थे। ऐसी परिस्थितियों में 3 लाख रुपए के बजट व 40 लोगों की टीम के साथ इस संस्थान की शुरुआत हुई और फिर इसी संस्थान ने देश के लिए छोटी सी माइक्रोचिप से लेकर चंद्रयान के लिए साउंड सेंसर तक की डिजाइन तैयार करके दी। बहुत कम लोग जानते हैं कि देश के घर घर तक रंगीन टीवी, सौर प्लेट, गांवों में आरओ सिस्टम पिलानी के इसी संस्थान ने पहुंचाए हैं। यह सब इतना असमान नहीं था, लेकिन यहां की टीम की जिद और मेहनत ने यह साबित कर दिखाया। 40 लोगों की वह टीम आज 300 से अधिक लोगों की टीम बन चुकी है। अब यह टीम देश के लिए करीब 47 परियोजनाओं पर काम कर रही है।



जीवन को सरल बनाने वाले आविष्कार सीरी पिलानी में हुए

सोलर इनवर्टर पंप

देश के किसानों के लिए खरदान साबित हुआ सोलर इनवर्टर पंप सीरी पिलानी में ही डिजाइन व डेवलप किया गया। सौर ऊर्जा से चलने वाला इनवर्टर भी यहीं विकसित हुआ।



सिलिकोसिस से बचाव

देश में सिलिकोसिस एक गंभीर व जानलेवा बीमारी है। पिछले ही साल सीरी ने इससे बचाव के लिए स्टोन डस्ट कंप्रिमेस्ड सिस्टम का विकास किया। जिसे मजदूरों के पास लगाया जाएगा। जिससे पत्थर की स्लरी उनके फेफड़ों में नहीं जा सकेगी।

आरओ प्लांट

देश के कई गांवों व शहरों में खारे पानी की समस्या को दूर करने में सीरी का योगदान है। वहां जगह जगह सगे आरओ प्लांट के लिए इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम का विकास सीरी ने ही किया।



युवाओं के लिए अवसर: स्टूडेंट्स को दे रहे ट्रेनिंग

साइंस के क्षेत्र में बढ़ रहे युवाओं के लिए सीरी अनेक अवसर पैदा हो रहे हैं। देश में सबसे पहले बिट्स पिलानी के साथ मिल कर एमई (माइक्रोइलेक्ट्रॉनिक्स) डिग्री कार्यक्रम शुरू किया गया। आने वाले समय में देश को इलेक्ट्रॉनिक क्षेत्र में अधिक से अधिक युवाओं की जरूरत होने वाली है।

127 स्टूडेंट्स

को प्रशिक्षण दिया गया पिछले साल। इसके लिए सीरी मैनपावर डेवलपमेंट प्रोग्राम चला रहा है।

भविष्य के प्रोजेक्ट

47 प्रोजेक्ट पर काम चल रहा है संस्थान में इस समय। इनमें कुछ प्रायोजित हैं तो कुछ परियोजनाओं से जुड़े हैं। इन सभी से ना केवल मानव जीवन सरल होगा बल्कि देश को भी कई क्षेत्रों में आत्मनिर्भर बनाने में मदद मिलेगी।

Published in:
Dainik Bhaskar

CSIR turns 79, IITR, CDRI celebrate

CSIR-IITR, CDRI

29th September, 2020

CSIR-Indian Institute of Toxicology Research (IITR) and Central Drug Research Institute (CDRI) celebrated 79th CSIR Foundation Day on Monday by organizing a webinar and a talk by experts on maintaining healthy brain and liver. Speaking in IITR's webinar on Mental Health: causes and management during Covid pandemic, president of Indian Academy of Neuroscience, and head of psychiatry department, King George's Medical University, Dr. PK Dalal said there has been a rise in psychiatric ailments due to corona.

Such patients should be monitored meticulously and counseled, he said. In the online talk on "Heart of the Liver" organized by CDRI, Institute of Liver and Biliary Sciences director Prof. Shiv Kumar Sarin emphasized on the importance of good liver health for a happy, healthy, and long life. He said we should keep liver fat less than 5% as fatty liver is the main cause of various health complications including diabetes, heart disease and hypertension.

CDRI also released its 70th-year celebration logo on the occasion.

Published in:
[The Times of India](https://www.timesofindia.com)

CCMB scientists launch study to check whether coronavirus can travel in air; if so, how far

CSIR-CCMB



The CSIR-Centre for Cellular and Molecular Biology (CCMB) here has launched a study in hospital environment to assess how long and far the coronavirus can stay in air from an infected person, in a bid to strengthen the safety of health workers. The objective of the study, which began around ten days ago, was to know whether the virus actually travels in the air and if it does, how far it goes and primarily intended to help the healthcare personnel, CCMB Director Rakesh Mishra said. The study comes two months after more than 200 scientists wrote to the World Health Organisation (WHO), claiming there was evidence that the coronavirus was airborne. Mishra said based on the outcome of the study, CCMB would later take samples from

28th September, 2020

closed halls or public places like a bank or a mall to assess the probability of the spread there. "We are going to see that how long and in terms of distance and in terms of time, the virus can stay in the air from source of its spread which is the patient," he told P T I here. Under the study, samples would be collected using an air sampler in a hospital setting, from different places like an intensive care unit (ICU) or a Covid-19 ward, with varying distance from the patient such as two, four and eight metres. It was to find out how far and how long the virus can stay - whether half-an-hour or ten minutes and till what distance it can go, he said. "The idea is to define what is the distance which is safe and if at all is there any virus in the air for longer than a few minutes. That is the strategy to make safety of healthcare workers better," Mishra said. The study would progress on the basis of factors, including availability of samples from hospitals, and the first conclusion was possible to be reached in around ten days, he said. It would also help in understanding if the virus was present in the air and if so,

how long, Mishra said. The safety of the healthcare workers was the priority, he said, adding, the findings would help understand the criteria for wearing of masks and social distancing and suitable recommendations to be followed can be finalised accordingly. that the virus travels for two or three metres, then sampling can be done in a bank and other issues like infectivity, safety of a place can be studied further, the scientist said. CCMB, under the Council of Scientific and Industrial Research, is premier research organisation in frontier areas of modern biology.

Published in:
[Deccan Herald](#)

डॉ. पंचारिया के ऊर्जावान नेतृत्व में सफलता के नए कीर्तिमान स्थापित करेगा सीरी : डॉ. जितेन्द्र जाधव

सीरी में सीएसआईआर के 79वें स्थापना दिवस समारोह का आयोजन

पिलानी (सीमा सन्देश सं.)। सीएसआईआर केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान पिलानी में 26 सितंबर को वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) का 79वां स्थापना दिवस समारोह आयोजित किया गया। सीएसआईआर राष्ट्रीय वांतरिक्ष प्रयोगशालाएँ के निदेशक डॉ. जितेन्द्र जे जाधव समारोह के मुख्य अतिथि थे। सीएसआईआर सीरी के पूर्व निदेशक डॉ. शमीम अहमद एवं पूर्व मुख्य वैज्ञानिक डॉ. एस एन जोशी इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि थे। विगत एक वर्ष के दौरान संस्थान से सेवानिवृत्त हुए 17 सहकर्मियों तथा पारंपरिक में 25 वर्ष की सेवा पूरी करने वाले संस्थान के 2 सहकर्मियों को उनको सम्मानित सेवा के लिए सम्मानित किया गया। कोविड 19 के कारण उत्पन्न परिस्थितियों के कारण इस वर्ष यह कार्यक्रम वर्चुअल ईवेंट के रूप में आयोजित किया गया। इस अवसर पर अतिथियों द्वारा संस्थान की वार्षिक रिपोर्ट 2019-20 का विमोचन भी किया गया। कार्यक्रम का



सीमा प्रसारण यूट्यूब और फेसबुक पर भी किया गया। मुख्य अतिथि और विशिष्ट अतिथियों सहित संस्थान के वर्तमान एवं अनेक पूर्व सहकर्मियों व उनके परिजन आदि माइक्रोसॉफ्ट टीमस एवं यूट्यूब व फेसबुक लिंक के माध्यम से आयोजन में सम्मिलित हुए। कार्यक्रम का शुभारंभ परंपरागत रूप से सरस्वती वंदना से हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. जितेन्द्र जे जाधव ने अपने स्थापना दिवस उद्बोधन में सीरी सहित

सीएसआईआर के सभी वर्तमान व पूर्व सहकर्मियों को सीएसआईआर स्थापना दिवस की बधाई दी। अपने संबोधन में उन्होंने सीएसआईआर सीरी के तीनों शोध क्षेत्रों, स्टाइबर भौतिक प्रणालियाँ, स्मार्ट संवेदक और सूक्ष्मतरंग युक्तियाँ द्वारा किए गए शोध कार्यों की सराहना करते हुए नए एवं उभरते हुए शोध क्षेत्रों की ओर प्रवृत्त होने का परामर्श दिया। उन्होंने कहा कि वर्तमान में हेल्थ केयर, प्रिस्क्रिप्शन फार्मिंग आदि क्षेत्रों में शोध एवं विकास

की बहुत संभावना है। गैलियम नाइट्राइड के क्षेत्र में भी अपार संभावनाओं को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि सीरी वर्तमान में गैलियम नाइट्राइड और मेम्स आदि क्षेत्रों में शोधरत है और ये क्षेत्र निश्चित रूप से सीरी को देश में इलेक्ट्रॉनिक्स के क्षेत्र में और अधिक ऊँचाई पर ले जाने में सहायक सिद्ध होंगे। साथ ही उन्होंने सीरी के वैज्ञानिकों को नए निदेशक डॉ. पंचारिया के मार्गदर्शन में नया रोडमैप तैयार कर नई ऊँचाई से कार्य करने के लिए प्रेरित किया जिससे वे आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना को साकार करने में अपना योगदान दे सकें। उन्होंने आशा व्यक्त की कि डॉ. पंचारिया के ऊर्जावान नेतृत्व में सीएसआईआर सीरी सफलता के नए कीर्तिमान स्थापित करेगा। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि डॉ. शमीम अहमद, पूर्व निदेशक सीएसआईआर सीरी ने संस्थान में बिताए अपने कार्य समय के कुछ संस्मरण सुनाए। उन्होंने कहा कि आज उन्हें ऐसा अनुभव हो रहा है जैसे वे वापस अपने घर आ पहुँचे हों। उन्होंने सीएसआईआर को अत्यंत

गतिमान संगठन बताते हुए कहा कि सीएसआईआर प्रयोगशालाओं में शोध एवं विकास कार्य का अनुकूल वातावरण है। समायोजित निर्णय पर सीएसआईआर मुख्यालय के साथ-साथ मंत्रालय का भी पूर्ण सहयोग मिलता है।

उन्होंने कोविड-19 के विरुद्ध सीएसआईआर प्रयोगशालाओं द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। और मुख्यालय जहाँ सीएसआईआर के साथ उन्होंने सेवा सम्मान प्राप्त करने वाले सभी सहकर्मियों सहित सभी पूर्व व वर्तमान सहकर्मियों व अतिथियों को सीएसआईआर स्थापना दिवस की हार्दिक बधाई दी। विशिष्ट अतिथि डॉ. एस एन जोशी, पूर्व वरिष्ठ वैज्ञानिक ने अपने संबोधन में कहा कि मुझे गर्व है कि मेरा संबंध इस प्रतिष्ठित संस्थान और सीएसआईआर जैसे गौरवमयी संगठन से रहा है। उन्होंने गर्व से कहा कि सीएसआईआर को इसरो और डीआरडीओ जैसे अनेक शोध संगठनों का जनक होने का श्रेय प्राप्त है।

Published in:

Seema Sandesh

CSIR launches healthcare supply chain portal

To provide info on requirement of healthcare essentials

**SPECIAL CORRESPONDENT
HYDERABAD**

CSIR Director General Shekar C. Mande said the aim of Council of Scientific and Industrial Research is to improve the socio-economic status of people, and partner with the industry to develop technologies that reach the market for the betterment of society. A national healthcare supply chain portal (www.aarogyapath.in) has been launched to provide information on the requirement of healthcare essentials.

Another app called 'Kishan Sabha' was launched to connect farmers to supply chain and freight transportation.

Lockdown innovations

Dr. Mande was addressing the staff of all the CSIR labs across the country on the occasion of the 79th Founda-

tion Day on Saturday. Earlier, Union Minister for Science & Technology Harsh Vardhan lauded the efforts of the scientists for their indigenous innovations during the current pandemic like ventilators, diagnostics kits, surveillance, drugs, PPEs, masks etc.

Technologies for all these was developed in six months from the initial phase of national lockdown.

Institute journey

Back in Hyderabad, former CSIR-IICT Director and Padma Bhushan A.V. Rama Rao was the chief guest at IICT where he elaborated the journey of the institute from a Regional Research Laboratory to the present state of internationally reputed institute for chemistry and chemical technologies.

Through the journey, the laboratory was committed

to the welfare of the society, and in line with the mandate, produced many process technologies for various drugs. The institute partnered with the industry to reach the people with affordable healthcare solutions. Not only drugs, the institute has aided the agriculture sector through pheromone and other related technologies.

CSIR-IICT Director S. Chandrasekhar said the institute is committed to work to take forward the vision of CSIR towards a completely self-reliant India or 'Atmanirbhar Bharat'.

Awards for children of its staff members for their performance in board examinations were announced.

The entire celebration was held online this year due to COVID-19 restrictions, a press release informed on Sunday.

AVRA Labs to support, recognise scientists in translational research

The chairs, named in honour of Dr A V Rama Rao, a former director of the CSIR-IICT, will provide a three-year fellowship to selected scientists to recognise and advance their efforts.

By Author [TelanganaToday](#) | Published: 28th Sep 2020 4:43 pm

Hyderabad: Hyderabad-based pharmaceuticals company, Avra Laboratories, founded by Padmabhushan Dr A V Rama Rao, will be establishing three research chairs at the Council for Scientific and Industrial Research (CSIR) with the aim to support and recognise exemplary work in the field of translational research.

The chairs, named in honour of Dr A V Rama Rao, a former director of the CSIR-IICT, will provide a three-year fellowship to selected scientists to recognise and advance their efforts.

The chair selection committee has selected Dr S Chandrasekhar, director, CSIR-IICT, Hyderabad for his contributions in translational research for the pharmaceuticals sector and Dr Amol A Kulkarni, senior principal scientist, CSIR-National Chemical Laboratory, Pune for his efforts in commercialisation of process equipment. They have been selected as nominees for FY 2020-2023 to receive the fellowship.

For over 25 years, Avra Laboratories has been working closely with domestic and multinational companies to develop and supply advanced pharmaceutical intermediates from lab to commercial scale, and has developed novel low-cost manufacturing processes for several complex molecules.

Translational research, a term often used interchangeably with translational medicine or translational science or bench to bedside, is an effort to build on basic scientific research to create new therapies, medical procedures, or diagnostics

Published in:
Telangana Today

ఐఐసీటీ శాస్త్రవేత్తల బృందానికి సీఎస్ఐఆర్ టెక్నాలజీ-2020 పురస్కారం

ఈనాడు ఢిల్లీ, హైదరాబాద్: కేంద్ర పరిశోధన సంస్థ సీఎస్ఐఆర్-ఐఐసీటీ హైదరాబాద్ కేంద్రం సంచాలకుడు, శాస్త్రవేత్త డాక్టర్ చంద్రశేఖర్ బృందానికి ప్రతిష్టాత్మక సీఎస్ఐఆర్ టెక్నాలజీ-2020 పురస్కారం దక్కింది. దిల్లీలో జరుగుతున్న 79వ సీఎస్ఐఆర్ అవార్డు వేడుకల్లో కేంద్ర వైద్యారోగ్యశాఖ మంత్రి డాక్టర్ హర్షవర్ధన్ శనివారం ఈ పురస్కారాలను ప్రకటించారు. డాక్టర్ చంద్రశేఖర్ నేతృత్వంలోని బృందం కోవిడ్ బాధితులకు చికిత్స అందించడంలో కీలకంగా నిలిచిన పాపిపిరవిర్ ఔషధాన్ని దేశీయ మూలకాలతో పునరుత్పత్తి చేయడంలో విజయం సాధించింది. తక్కువ ధరలో ఔషధాన్ని స్థానికంగా అభివృద్ధి చేసేందుకు ఐఐసీటీ బృందం సిప్లా సంస్థతో కలిసి పనిచేసింది. ఈ బృందంలో సీనియర్ శాస్త్రవేత్తలు సీహెచ్ రాజరెడ్డి, పి.నాగేందర్, ప్రదీప్ ఎస్ మైంకార్ ఉన్నారు.



చంద్రశేఖర్

CSIR Celebrates its 79th Foundation Day

CSIR-IICT

27th September, 2020

Dr Harsh Vardhan, Union Minister of Science and Technology, Earth Sciences, Health and Family Welfare and Vice President, CSIR presided over the event. In view of the current Covid-19 pandemic while the physical event was small gathering with appropriate social distancing, Dr. Shekhar C. Mande, DG, CSIR & Secretary, DSIR (Department for Scientific & Industrial Research), A. Chakraborty, Head, HRDG, and all CSIR labs and several others joined the event through various social media platforms.

The Minister appreciated the work done by entire CSIR during this current Covid-19 crisis. He said under the times of needs CSIR labs have risen to the occasion and delivered diagnostics, drugs and ventilators among many others. Union Health Minister Dr Harsh Vardhan also released a digital book and a short film on the CSIR's COVID-19 efforts, which highlighted the people behind the various initiatives of CSIR in its fight against Covid-19.

DG-CSIR Dr. Shekhar Mande announced the winners of the prestigious Shanti Swarup Bhatnagar Awards 2020. Union Health Minister Dr Harsh Vardhan urged CSIR to brainstorm and come up with roadmap and strategy for achieving 'Atmanirbhar Bharat' through S&T. He expressed happiness to see the innovativeness of the young school students and complimented all the Young Scientist Awardees, Technology Award Winners, CAIRD award winners.

Published in:

[DD News](#)

Restoration of nullah during Kumbh: NEERI gets CSIR Technology Award

CSIR-NEERI

27th September, 2020



Dr Rakesh
Kumar



Dr Atya
Kapley



Dr Ritesh
Vijay



Hemant
Bherwani



Dr Rita
Dhodapkar



Dr Tuhin
Bannerjee

Rivers have their own importance in Indian tradition. Most of the holy activities are held either on the banks of rivers or in the middle of it. In most cases these activities result in damaging the ecology of rivers. Considering this aspect, last year during Kumbh Mela on the banks of river Ganga, help from team of National Environmental and Engineering Research Institute (NEERI) was sought. The team of NEERI proved this decision as right. It came up with the technology Restoration of Nallahs with Ecological Units (RENEU). This technology did a wonder during last year's Kumbh at Ganga that fetched the CSIR Technology Award 2020 (CTA-2020) for it. RENEU is different from the conventional Sewage Treatment Plants (STPs), as it treats the flowing wastewater in the drain itself. Besides this uniqueness, RENEU is economical and consumes far less time for construction and operation. It eliminates the need for the construction of piping and pumping networks for taking the sewage to STPs. A team of scientists including Dr Atya Kapley, Dr Ritesh Vijay, Hemant Bherwani, Dr Rita Dhodapkar, Dr Tuhin Banerjee has developed this technology under the leadership of Dr Rakesh Kumar, Director,

CSIR-NEERI. Moorthy Nair, Saisaurabh Asoria, Narendra Kumar and Shahique are the project assistants who contributed to the development and optimisation of the technology. RENEU was successfully implemented in the drains, meeting river Ganga in Prayagraj, during 'Kumbh 2019'. The treated water from drains was not only visibly clean but also met all the discharge norms set by Central Pollution Control Board (CPCB) and National Mission for Clean Ganga (NMCG). RENEU helped in the cleanup of river Ganga during the crucial time of Kumbh when devotees took bath in the holy water of the river. The inset shows the transformation of the drain and shows the clean water discharging into the river. RENEU reduces the odour and mosquito problem near the drain, while promoting biodiversity in the area. RENEU is planned to get implemented in more 100 drains across the country in more than 5 states including but not limited to Uttar Pradesh, Bihar, Jharkhand, Maharashtra and Delhi.

Published in:
[The Hitavada](#)

सीएसआईआर-एनएमएल को मिला बेस्ट टेक्नोलॉजी अवार्ड

गर्त

जमशेदपुर | वरीय संवाददाता

काउंसिल ऑफ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च (सीएसआईआर) के 79वें स्थापना दिवस पर शनिवार को जमशेदपुर स्थित सीएसआईआर-नेशनल मेटलर्जिकल लैबोरेटरीज (एनएमएल) को बेस्ट टेक्नोलॉजी अवार्ड इन फिजिकल साइंस-2020 से नवाजा गया।

एनएमएल जमशेदपुर को यह

पुरस्कार मोबाइल के वेस्ट लीथियम-कोबाल्ट बैटरीज के ब्लैक कैथोड से कोबाल्ट और सोना निकालने की विधि का आविष्कार करने और इसके वाणिज्यीकरण के लिए दिया गया। कोरोना महामारी को ध्यान में रखते हुए ऑनलाइन माध्यम से आयोजित कार्यक्रम में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री द्वारा नई दिल्ली से इस पुरस्कार को एनएमएल के डॉ. मनीष झा और उनकी टीम को दिया गया। मौके पर सीएसआईआर महानिदेशक डॉ. शेखर सी मांडे भी मौजूद रहे। इधर,

सीएसआईआर-एनएमएल के निदेशक डॉ. इंद्रनील चट्टोपाय ने इस उपलब्धि के लिए डॉ. मनीष झा और उनकी टीम को बधाई दी है। बताया गया कि एनएमएल को ई-कचरा रिसाइकिलिंग के क्षेत्र में तकनीकी विकसित करने एवं इसको कई औद्योगिक ईकाइयों में हस्तांतरित करने और सफलतापूर्वक उत्पादन करने के लिए पुरस्कार मिला। **वर्चुअल तरीके से मना स्थापना दिवस** सीएसआईआर-एनएमएल का स्थापना दिवस शनिवार को ऑनलाइन तरीके से मनाया गया।

मौके पर बतौर मुख्य अतिथि सेल की वाणिज्य निदेशक सोमा मंडल मौजूद रहीं। डॉ. इंद्रनील चट्टोपाय ने स्वागत भाषण देकर वेबिनार की शुरुआत की। इसके बाद 70 वर्षों में मिनेरल्स, मेटल्स और मेटलर्जी के क्षेत्र में सीएसआईआर-एनएमएल द्वारा दिये गए योगदान पर डॉक्यूमेंट्री दिखाई गई। वहीं सीएसआईआर की ओर से 25 वर्ष का सेवा काल पूरा करने वाले

कर्मचारियों और गत बोर्ड परीक्षाओं में उत्कृष्ट अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया।

भारत में नहीं था कोबाल्ट का भंडार : एनएमएल की ओर से बताया गया कि अबतक भारत में कोबाल्ट का भंडार नहीं है। जबकि लीथियम-आयन बैटरीज में यह काफी मात्रा में पाया जाता है। पर मोबाइल की बैटरीज खराब होने के बाद इन्हें फेंक दिया जाता है।



कांग्रेस के रोहन गुप्ता ने सोते हुए दुकानदारों की पुरानी तस्वीरें शंखर की

इंडियन लेबरर्स यूनियन के रोहन जीविका क्विंटेंट के वेयरहाउस स्टेशन गुप्ता ने 24 सितंबर को कुछ तस्वीरें दफ्तार कीं हैं। तस्वीरों में दिखा रहा है कि दुकानदार सो रहे हैं। रोहन गुप्ता ने दफ्तार करते हुए लिखा कि पूरे देश में सड़ी जहर के अवसर हैं। अतिरिक्त लिखे जले तक इसे 2,400 बार लाइक और 500 से ज्यादा बार टैग किया गया है। वे तस्वीरें इस तरह शेयर हो रही हैं जब भारत की अर्थव्यवस्था अपने कमजोर चरम पर है, कोरोना वायरस के कारण लगाए गए लॉकडाउन के सबसे ताज़ा तस्वीरों ने अपनी लोकप्रियता पाई। वहीं देश के दुकानदारों का भी बुरा हाल है। भारत की किन्हीं अर्थव्यवस्था को लेकर अमेरिकी मीडिया ऑनलाइन पत्रिका भी खबरें साप रहे हैं।

बैटरी से सोना और कोबाल्ट निकालने के लिए एनएमएल जमशेदपुर को मिला सीएसआईआर का बेस्ट टेक्नॉलॉजी अवार्ड

नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित सीएसआईआर के स्थापना दिवस समारोह में प्रौद्योगिकी मंत्री हर्षवर्धन ने की घोषणा

- एनएमएल के वैज्ञानिक डॉ.मनीष कुमार झा और उनकी टीम को मिला अवार्ड, सारे वैज्ञानिकों को नकद दो-दो लाख रुपये मिलेंगे
- एनएमएल के निदेशक डॉ.इन्दुनील घट्टोराज ने वैज्ञानिकों को दी बधाई



ई वेस्ट के क्षेत्र में अग्रणी है एनएमएल

एनएमएल ने पिछले कुछ सालों में इलेक्ट्रॉनिक वेस्ट के क्षेत्र में अग्रणी काम किया है। इलेक्ट्रॉनिक वेस्ट से दुर्लभ, कोशरी, स्टैटिक (जिन धातुओं का रसायनकार्यों में इस्तेमाल होता है) और रेसा अर्ध (धातु में धकेले जाते हैं) धातुओं को निकालने की तकनीक भी सरलतापूर्वक विकसित की है। निदेशक डॉ.इन्दुनील घट्टोराज ने बताया कि एनएमएल जमशेदपुर रिफ़ाइनरी टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में देश में अग्रणी है। उन्होंने बताया कि इलेक्ट्रॉनिक वेस्ट पूरी दुनिया के लिए खतरा बना हुआ है, जिस कारण यह बाजार हाथ पकड़ रहा है वहीं यह बाजार और प्रकृति के लिए बहुत बड़ी चुनौती है। विज्ञान रूप से ऐसे तकनीक विकसित होने से भारत के विकास के साथ ही पर्यावरण सुधरने में मदद मिलेगी, क्योंकि भारत में अभी भी 85 फीसदी इलेक्ट्रॉनिक वेस्ट का निपटारा अनॉर्गेनिक क्षेत्र (इन्फ़ॉर्मल सेक्टर) में होता है, जो स्वास्थ्य के लिए बेहतर हो खतराकार है। इस प्रोजेक्ट के प्रमुख डॉ.मनीष कुमार झा ने बताया कि सिमिपन कोबाल्ट बैटरी में कोबाल्ट के अलावा मैंगनीज, लिथियम और सोडियम होता है, जिसे रासायनिक प्रक्रिया द्वारा निष्कालन बेहतर जटिल होता है। बैटरी में बिचिखराए होने की वजह से कोई एक तकनीक विकसित करना आसान नहीं होता, उन्होंने बताया कि इलेक्ट्रॉनिक वेस्ट में कोबाल्ट और लिथियम का प्रतिकार जल्दा जल्दी कोबाल्ट बैटरी में काम होता है।

जमशेदपुर : इलेक्ट्रॉनिक वेस्ट के क्षेत्र में तकनीक विकसित करने और उसे सरलतापूर्वक इस्तेमाल को प्रोत्साहन देने के लिए कारीगरन और सहायक रॉड इंडियन रिफ़ाइनरी (सीएसआईआर) ने पिछले नवंबर में जमशेदपुर स्थित एनएमएल प्रयोगशाला (एनएमएल) को सीएसआईआर-वेस्ट टेक्नोलॉजी अवार्ड से नवाजा है। विज्ञान को नई दिशा के विज्ञान भवन में आयोजित सीएसआईआर के 79 वें स्थापना समारोह के दौरान विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री हर्षवर्धन ने यह घोषणा की। वहीं पर सीएसआईआर के महाप्रदेशक डॉ.मणि भी मौजूद थे। एनएमएल जमशेदपुर को वेस्ट टेक्नोलॉजी का यह अवार्ड विभिन्न साइंस को बेनी में दिए

गया है, यह अवार्ड सिमिपन कोबाल्ट बैटरी और कोबाल्ट कोटेड घरेलू (जिन घाल पर खेने की पाठ हो) से सोना और कोबाल्ट निकालने की एनएमएल तकनीक विकसित करने के लिए दिए गया है। एनएमएल जमशेदपुर के निदेशक डॉ.इन्दुनील घट्टोराज और इस प्रोजेक्ट के प्रमुख डॉ.मनीष कुमार झा ने देश के विकास में एनएमएल की अग्रणी भूमिका बताई है और खुशी जताया कि है। इस तकनीक को विकसित करने वाली टीम में डॉ.मनीष कुमार झा, डॉ.सुपरी हसन, रजित कुमार सिंह, डॉ.रंजक कुमार शर्मा, डॉ.अर्चना कुमारी, रीतू पांडे और अंजना दिनकर शामिल हैं। इस अवार्ड के तहत हाथ पकड़ने को रमर पड़िका के साथ दो-दो लाख रुपये नकद मिलेगा।

एनएमएल ने इस तकनीक को नई दिशा मिलान प्रौद्योगिकी प्रोब्लेम लिमिटेड को सरलतापूर्वक प्रदर्शन भी किया है।

इलेक्ट्रॉनिक क्रांति की देन है ई वेस्ट

इलेक्ट्रॉनिक क्रांति ने हमारे जीवन को कुछ-कुछियाओं से परिपूर्ण हो दिया है जहां कई चुनौतियां भी उत्पन्न हो रही हैं। विभिन्न इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के उपयोग से रचनात्मक को विनाश एवं अस्वास्थ्यकर गतिविधियों को प्रोत्साहन मिलने के साथ-साथ पर्यावरण के लक्ष्य भी बढ़े हैं। अधिक लोग ये खतरा होने वाली इन्हीं इलेक्ट्रॉनिक कचराओं के अभाव में 'ई-कचरा' के रूप में एक नई पर्यावरणीय

समस्या को जन्म दिया है। ई-कचरा से उत्पन्न बेकार पड़े बैटरी इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों से हैं, जो अपने उपयोग के दौरान बहुत उपद्रव नहीं रह जाते, विनाशकारी देशों को सबसे अधिक दुर्लभ खनिज प्राप्त करने जाने के कारण भारत सीधे देश ऐसे ई-कचरे के बड़े अभाव से परिचित हैं। दुनिया के देशों में किसी से बड़ी इलेक्ट्रॉनिक क्रांति से एक तरफ नई जगह लोगों को इस पर निर्भर बहती जा रही है वहीं पर्यावरण के

लिए खतरा और फैला बैटरी पानी कोषों में बेकार पड़े बैटरी इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों से हैं, जो अपने उपयोग के दौरान बहुत उपद्रव नहीं रह जाते, विनाशकारी देशों को सबसे अधिक दुर्लभ खनिज प्राप्त करने जाने के कारण भारत सीधे देश ऐसे ई-कचरे के बड़े अभाव से परिचित हैं। दुनिया के देशों में किसी से बड़ी इलेक्ट्रॉनिक क्रांति से एक तरफ नई जगह लोगों को इस पर निर्भर बहती जा रही है वहीं पर्यावरण के

Harsh Vardhan lauds CSIR for delivering 100-odd technologies to fight pandemic

TIMES NEWS NETWORK

New Delhi: All labs of Council of Scientific & Industrial Research (CSIR), India's premier R&D body rose to the occasion and delivered 100-odd technologies for the fight against the Covid-19 pandemic, science & technology minister Harsh Vardhan said on Saturday.

"Be it drugs, vaccines, testing, sequencing, PPEs, hospital assistive devices, masks, sanitisers, disinfection systems, CSIR came up with quick and innovative solutions," said Vardhan while addressing scientists on the occasion of the CSIR's 79th Foundation Day.

CSIR, which has over 35 laboratories working on subjects ranging from genomics to aeronautics, and from leather to me-



A patient undergoes thermal screening at a dental clinic in Delhi on Saturday

tallurgy, announced names of 14 scientists from different institutions as recipients of the prestigious Shanti Swaroop Bhatnagar Award for 2020 for their contribution to seven fields—biological, chemical, mathematical,

medical, physical, engineering and earth sciences.

On the Covid-19 pandemic, Vardhan, who is also the health minister, said India conducted 15 lakh tests in a day on Friday, stressing that when the pande-

mic began, only a few thousand tests were being conducted.

"We rose to the occasion in every responsible and committed manner. Nobody thought about the mandate every laboratory got... whether working in the field of genomics or aeronautical, chemicals or biology. Everybody was trying to contribute something or the other," said the minister.

He noted that more than 2000 genomes have been sequenced at CSIR and scientists have developed tools for analysis. "While CSIR developed novel testing methods and diagnostics, synthesised low cost drugs like Favipiravir, drove vaccine trials, and so on, it also put together makeshift hospitals, one of which I inaugurated in Ghaziabad recently," said Vardhan.

Published in:

The Times of India

आईएमएमटी ने सीएसआईआर का 79 वां स्थापना दिवस मनाया

भुवनेश्वर. सीएसआईआर-आईएमएमटी ने 26 सितंबर 2020 को ई-प्लेटफॉर्म पर पैरेंट बॉडी काउंसिल ऑफ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च (सीएसआईआर), नई दिल्ली का 79 वां स्थापना दिवस मनाया. सुबह का कार्यक्रम नई दिल्ली के आनंद भवन में आयोजित किया गया, जहां डॉ. हर्षवर्धन एस एंड टी के माननीय केंद्रीय मंत्री, सीएसआईआर वैज्ञानिक और कर्मचारी सम्मानित अतिथि के रूप में उपस्थित रहे. आईएमएमटी ने सीएसआईआर स्थापना दिवस को चिह्नित करने के लिए भुवनेश्वर में कई कार्यक्रम आयोजित किए.

अनुसंधान विद्वानों के लिए एक ई-पोस्टर प्रस्तुति प्रतियोगिता जिसमें 19 विद्वानों ने अपने शोध निष्कर्ष प्रस्तुत किए. दोपहर को प्रो. सुधात्सवाबासू निदेशक आईएमएमटी ने आईएमएमटी के वैज्ञानिकों और कर्मचारियों को संबोधित किया और पिछले एक साल में सीएसआईआर और सीएसआईआर -आईएमएमटी द्वारा महत्वपूर्ण उपलब्धियों और प्रदर्शन पर अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की. स्थापना दिवस व्याख्यान देते हुए डॉ. संजय कुमार झा सीएमडी, मिश्र

धातु निगम लिमिटेड (एमआईडीएचएनआई), हैदराबाद ने कोबाल्ट, निकेल, दुर्लभ पृथ्वी तत्वों और धातु जैसे महत्वपूर्ण और सामरिक सामग्रियों में आत्मनिर्भरता के लिए वैज्ञानिक योगदान के महत्व पर प्रकाश डाला.

भारतीय उद्योगों के लिए प्रौद्योगिकियों को विकसित करने में आईएमएमटी वैज्ञानिकों के योगदान की सराहना करते हुए, उन्होंने कहा कि एमआईडीएचएनआई और आईएमएमटी दोनों प्राथमिकता के आधार पर लघु और दीर्घकालिक दोनों लक्ष्यों के साथ प्रक्रियाओं के विकास की दिशा में पीपीपी मोड में काम करेंगे. यह प्रसंस्करण लागत को कम से कम न्यूनतम करने का लक्ष्य रखेगा. उन्होंने आश्वासन दिया कि एमआईडीएचएनआई इस दिशा में आईएमएमटी प्रौद्योगिकियों के पैमाने पर योगदान देगा.

आईएमएमटी ने इस अवसर पर अपनी हिंदी पत्रिका का विमोचन किया और इस अवसर पर अपने कुछ वरिष्ठ वैज्ञानिकों और कर्मचारियों को सम्मानित किया. कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. एके साहू मुख्य वैज्ञानिक, डॉ. सत्यजित रथ प्रधान वैज्ञानिक और बीसी साहू प्रशासन नियंत्रक ने किया.



Published in:
Odia Samaj

CSIR 79th Foundation Day: NML Jamshedpur wins Best Technology Award 2020

CSIR-NML



National Metallurgical Laboratory (NML) on the occasion of Council of Scientific and Industrial Research's (CSIR) 79th Foundation Day celebration received the Best Technology Award in Physical Sciences for 2020 for the developed indigenous technology for 'Extraction of cobalt and gold from the black cathode material of Li-Co batteries and gold-coated surface of e-waste, respectively'. Dr. Manis Kumar Jha, Dr. Jhumki Hait, Ranjeet Kumar Singh, Dr. Pankaj Kumar Choubey, Dr. Archana Kumari, Rekha Panda, Om Shankar Dinkar were part of the winning team. This technology was transferred to M/s EXIGO Recycling Pvt. Ltd., New Delhi. The award consists of plaque for each team member and two lakhs rupees in cash. In the past,

26th September, 2020

CSIR-NML had transferred similar e-waste recycling processes to various other industries for the recovery of rare, rare-earth, precious and strategic metals. In India CSIR-NML, Jamshedpur is a pioneer for the development of various recycling technologies. The scrap or e-waste recycling sector has noteworthy potential to contribute to the country's economy and create employment. In India, out of all e-waste generated, only 5% of it gets formerly recycled. About 95% recycling is usually carried out by the informal sector in an unorganized manner with high health risks. Li-Co batteries contain active cathode material with variable concentration of Co, Li, Mn, Cu, etc. which makes the chemical processes more complex for metal recovery. Moreover, the heterogeneous nature of the variety of batteries received from the various sources/ municipal wastes is a great challenge during the technology development to recover Co as a high purity product. The batteries of branded companies possess high percentages of Co and Li while that of local companies possess a variety of

impurities which create complexities in recovery. The Council of Scientific and Industrial Research (CSIR) – National Metallurgical Laboratory today celebrated the 79th CSIR Foundation Day through a virtual platform (MS Team). Soma Mondal, Director (Commercial), SAIL was present on the occasion as Chief Guest.

The function started with CSIR-NML's documentary film depicting CSIR-NML's contributions over the last 70 years in the area of minerals, metals, materials and metallurgy, followed by a video showcasing CSIR's contributions in combat Covid 19 pandemic.

Dr. Indranil Chatteraj, Director, NML Chatteraj quoted the greetings of Hon'ble Prime Minister, to CSIR, in which he had indicated that CSIR was at the forefront of furthering scientific research and innovation in India and that CSIR had also been playing a valuable role in fighting COVID-19.

Published in:
[Avenue Mail](#)

Shanti Swarup Bhatnagar Prize 2020: 12 researchers receive India's highest science award

CSIR



The names of 12 scientists who received the country's highest science award Shanti Swarup Bhatnagar Prize for 2020 were announced during the foundation day of the Council for Scientific and Industrial Research (CSIR) on Saturday. The prize is given to Indian scientists below the age of 45 for outstanding research in seven fields—Biology, Chemistry, Environment Science, Engineering, Mathematics, Medicine and Physics. A book and a short film on the contributions of CSIR laboratories and institutes in India's fight against coronavirus disease (Covid-19) were also released. "The present time is a difficult time. We have been continuously engaged in the fight against Covid-19 for nine months now. Apart from

26th September, 2020 the health ministry, the whole scientific community of India has been serving the cause of mitigation of Covid-19. Now, the Feluda paper diagnostic kit is in the offing, and I am eagerly waiting for it as it will revolutionise the testing capability and capacity," said Dr Harsh Vardhan, Union science minister at the event. Feluda was developed by one of the CSIR institutes were also released—Institute of Genomics and Integrative Biology. One of the researchers who developed the testing method, Dr Debjyoti Chakraborty, was awarded the CSIR Young Scientist Award for 2020. For Biological Sciences, Dr Shubhadeep Chatterjee from the Centre for DNA Fingerprinting and Diagnostics and Dr Vatsala Thirumalai at the National Centre for Biological Sciences were awarded. Dr Chatterjee's work focuses on mechanisms that promote or suppress bacterial disease in plants. Dr Thirumalai works on neural circuits that control movement during development and adulthood in animals. In the field of Chemical Sciences, Dr Jyotirmayee Dash from Indian Association

for the Cultivation of Science and Dr Subi Jacob George from Jawaharlal Nehru Centre for Advanced Scientific Research were named recipients. Dr Dash's team works on new methodologies for synthesis of diverse molecules that can be used to study structure and function of therapeutic targets. Dr George is an organic chemist who works on supermolecular synthesis. For Earth, Atmosphere, Ocean and Planetary Sciences, Dr Abhijit Mukherjee from Indian Institute of Technology Kharagpur and Dr Suryendu Dutta from Indian Institute of Technology Bombay were named recipients. Dr Mukherjee is a geology professor and works on the exploration of groundwater as a sustainable drinking water source. Dr Dutta works in the department of earth sciences and focusses on shale gas potential studies and higher plant biomarkers in sediments and crude oils. For Engineering Sciences, Dr Amol Arvindrao Kulkarni from CSIR National Chemical Laboratory and Dr Kinshuk Dasgupta from Bhabha Atomic Research Centre were awarded. Dr Kulkarni's research focusses on developing multiphase reactors and microreactors.

For Mathematical Sciences, Dr Rajat Subhra Hazra from Indian Statistical Institute and Dr U K Anandavardhanan from Indian Institute of Technology-Bombay were awarded. For Medical Sciences, Dr Bushra Ateeq from Indian Institute of Technology Kanpur and Dr Ritesh Agarwal from the Postgraduate Institute of Medical Education and Research Chandigarh received the award. Dr Ateeq's research focusses on cancer biomarkers and molecular events that lead to progression in prostate and breast cancer. Dr Agarwal is a professor of pulmonary medicine and his main research area is a fungal infection called Allergic bronchopulmonary aspergillosis.

For physical sciences, the award went to Dr Rajesh Ganapathy from Jawaharlal Nehru Centre for Advanced Scientific Research and Dr Surajit Dhara from University of Hyderabad.

Published in:

[Hindustan Times](#)

Scientific community has risen to every challenge and converted it into opportunity: Harsh Vardhan

CSIR

26th September, 2020



Mr. Vardhan was addressing the 79th CSIR Foundation Day

The scientific community has risen to every challenge facing the country and converted it into an opportunity, Science and Technology Minister Harsh Vardhan said on Saturday.

Addressing the 79th CSIR Foundation Day, Mr. Vardhan said that during the coronavirus pandemic, scientists of the Council of Scientific and Industrial Research (CSIR) contributed towards making ventilators and personal protection (Personal Protection Equipment) kits to genome sequencing. The CSIR also initiated projects like repurposing of drugs for COVID-19. He also asked the

CSIR to organise a brainstorming session of young scientists to assess how the country can achieve 'Aatmanirbharta' (self-reliance). "Whenever there has been a challenge of any form before the country, we have always been able to convert it into an opportunity and they (scientists) ultimately deliver good for the society and help in alleviating hardships in many ways," Mr. Vardhan said. "Whenever any responsibility is given to CSIR, they go ahead in a very dynamic way," he said, citing an instance where he had proposed use of green crackers on Diwali as an alternative to traditional firecrackers to address the problem of pollution. On the ongoing pandemic, Mr. Vardhan, who is also the Health Minister, said the fight against coronavirus started on January 8, in a day or two of the news about the cases in China being delivered by the World Health Organisation. Since then, apart from the Health Ministry, the scientific community of India has been serving the cause of mitigation of COVID-19 in the best possible manner.

He said until Friday, India conducted 15 lakh tests in a day, stressing that when the pandemic began, only a few thousand tests were being conducted. “We rose to the occasion in every responsible and committed manner. Nobody thought about the mandate every laboratory got whether working in the field of genomics or aeronautical, chemicals or biology. Everybody was trying to contribute something or the other,” Mr. Vardhan noted.

The CSIR has nearly 39 laboratories institutes working on very niche subjects ranging from genomics to aeronautics, from leather to metallurgy.

Published in:
[The Hindu](#)

CSIR-CMERI celebrated the 79th CSIR Foundation Day

CSIR-CMERI

26th September, 2020



In his address Dr. Hirani urged all to set a benchmark for themselves by defying all resistance, so as to 'Selflessly Serve the Society through dedicated R&D efforts. Prof. (Dr.) Harish Hirani in his CSIR Foundation Day address stated, "This Institute has strong foundations to excel as an Institute of Global Excellence. All the technologies developed here are thoroughly evaluated before commercialization. CSIR-CMERI is focussed upon improving the Entrepreneurial potential of individuals instead of making them lean towards jobs. Collaboration instead of Competition is the Mantra for the future. Comprehensive Waste Management and

Complete Eradication of Manual Scavenging are two of the few priority objectives for CSIR-CMERI. The CSIR-CMERI technologies besides solving core problems also address issues such as contamination of underground Water and reduction of Water Usage for Agricultural purposes." Director, CSIR-CMERI then presented the recent achievements of the Institute. He stated that all the efforts and results of the Institute are reaching out towards the Atmanirbhar Bharat mission of the Government. He also made a call for quantification of purpose of our scientific endeavours which must also have social and innovation factors. He also delivered on the indicators intended to reflect i.e. Scientific characteristics, economic characteristics and social characteristics. The future course of the Indian Economy will be decided by the Youth and therefore Up skilling the youth will fuel the Nation forward towards being an Economic and Scientific Powerhouse. Thus, the Skill & Innovation Promotion Group of CSIR-CMERI is relentlessly

engaged in providing Skill sets to the Youth and to help them attain knowledge about the rapid strides in Science & Technology made by the Institute, to encourage and inspire them to go beyond the technological achievements of the Institute and further add value onto it. This careful nurturing of the young minds will equip and prepare them to become the Entrepreneurs of Tomorrow, which in turn will drive the Nation's Future. Prof. Hirani talked about the Brand CSIR-CMERI. He highlighted the achievements of the Institute in recent viz the world's largest Solar Tree, Mob Control Vehicle, development of Mechanized Drain Cleaning on-site Waste Water purification technology, Dry Fogging Shoe Disinfector, Solar Chulha, Municipal Solid Waste Disposal System and other solid management system, UV Disinfection devices and Box, Automatic Biodiesel Plant, Automatic Biomass Briquetting Plant, Outdoor Air Purifier, Hospital Care Assistive Robotic Device, work done in water testing etc. He also discussed about the decision to hold an All India Annual Essay Competition by the Institute. For the significant performance of the Institute on the front of the Intellectual Property Rights and generation of cash flow he congratulated the concerned scientists for their achievements.

The Start-Ups and the Micro Industries are the key elements for strengthening the fundamentals of the Indian Economy. Thus, CSIR-CMERI transferred the following four technologies to the following MSEs:

1. Automatic Biomass Briquetting Technology Mr.Sudip Halder, Partner, M/s. Dipsam Shakti Pvt. Ltd, Krishnagar, West Bengal, stated that “The technology of Automatic Biomass is a very useful solution towards the problem of stubble burning especially in Punjab, Haryana, UP and Delhi. The machine is simple in operation, low cost and can be operated by a single operator. Apart from straw, other biomass like leaves, saw dust, grass can be converted into briquette. Also, this is in line with the dream of our Hon'ble Prime Minister for making a 'Swachh Bharat'. I am pretty sure, with this CSIR CMERI developed technology, I shall be able to start the business and reach to the society.”

2. Semi-Continuous Bio-Diesel Technology- Mr. M Sesha Sai, Managing Director, M/s. Best Engineering Technologies, Hyderabad stated that “With increasing demand of Biodiesel and the present Govt policy of ‘Atma Nirbhar Bharat’, we felt the technology of Semi Continuous Biodiesel Plant is an unique business opportunity for us. This will also create employment generation as well as make a Swachha and Atma Nirbhar Bharat. This technology will provide the solution of import substitution by reducing the burden of import bill and dependence on diesel and LPG.”

3. Contactless Hand Washer- Dr. Fayaz Ahmad, Director, Bandipora College of Information & Technology, Delhi stated that “The Technology developed by CSIR-CMERI is best suited for institutions, schools, and workplaces as the Contactless hand washer comes with inbuilt storage of 10 litres of liquid soap solution which shall provide safe hand washes as per WHO protocol to more than 2000 persons /students in one soap filling. Moreover, the provision of on built battery storage makes it very useful to be used in areas like Jammu & Kashmir as there are frequent power cuts and the Technology can work without electricity too.”

4. High Flow-Rate Arsenic Removal Technology-

Mr. Sanjay Datta, Managing Director, M/s. Capricans Aqua Pvt. Ltd, West Bengal on this occasion stated, “The High Flow Rate Arsenic Removal Technology is a cost effective solution for the Arsenic Contamination troubles of the society. The commercialization of the technology will help us reach out to various sections of the society and its people across the Nation. Its deployment at Community Level can also ensure maximum collective benefit.”

The decision to transfer technologies to the Micro and Small Enterprises was undertaken to ensure that the R&D benefits of the CSIR-CMERI developed technologies in the paradigm of Energy, Water and its associated utilities benefits the society across the Nation coupled with providing viable entrepreneurial opportunities to the Youth and Micro & Small enterprises.

Published in:

[DD News](#)

Modi lauds CSIR on its foundation day

CSIR

26th September, 2020

Prime Minister Narendra Modi lauded the Council of Scientific and Industrial Research (CSIR) on its foundation day on Saturday, saying it has been at the forefront of furthering scientific research and innovation in India. In a tweet, Modi added the organisation has also been playing a valuable role in fighting COVID-19.

"Greetings to all those associated with CSIR on its Foundation Day. CSIR is at the forefront of furthering scientific research and innovation in India. They have also been playing a valuable role in fighting COVID-19. Best wishes to CSIR for its future endeavours," he said.

Published in:
[Outlook](#)

Award for team led by IICT Director

CSIR-IICT

26th September, 2020

The CSIR-IICT team led by Dr S Chandrasekhar, director of the institute, was awarded the prestigious CSIR Technology Award 2020 for outstanding contributions to affordable healthcare, by developing a novel and cost-effective process for the process technology of Favipiravir to combat Covid-19.

Cipla partnered with the institute to launch the drug, Ciplenza, in the market in the first week of August with lower than market price, a press release said. Dr Chandrasekhar, Director CSIR-IICT, expressed his gratitude to Dr YK Hamied, Cipla chairman, for joining hands in repurposing Favipiravir to combat the novel coronavirus.

The partnership between IICT and Cipla ensured the drug was available at an affordable price in the Indian market as a result of indigenous raw materials used. The team led by Dr Chandrasekhar worked towards a process that made use of indigenous raw materials in the mid of global restrictions to control the current pandemic when a deterrent for imports from other countries was prevailing.

In less than six months, after the initial nationwide lockdown, India succeeded in repurposing Favipiravir to fight Covid-19 with locally available ingredients which demonstrates the efforts of CSIR vision of Atmanirbhar Bharat, the press release added.

Published in:
[Telangana Today](#)

79th foundation day of CSIR observed

CSIR-CSIO

26th September, 2020

The Central Scientific Instruments Organisation (CSIO) observed the 79th Foundation Day of the Council for Scientific and Industrial Research (CSIR) today. Dr Praveen Nahar, director, National Institute of Design (Ahmedabad), gave a lecture on “Design Innovation and Thinking”. He said designers should be involved in all the phases of the project. He expressed confidence that the CSIO’s scientists and NID’s designers can bring up more effective products.

Dr Girish Sawhney, former director general of the CSIR, said, “Design should be a built-in element for the scientific prototype.” Prof S Anantha Ramakrishna, director, CSIO, highlighted the role CSIR in the growth of the country.

He spoke how the CSIO was helping frontline Covid warriors in mitigating the effects of the Covid-19 outbreak. — TNS

Published in:
[The Tribune](#)

CSIR-CDRI

26th September, 2020

Lucknow (PNS): CDRI celebrates World Contraception Day, which falls on Saturday, with 30 years of completion of its drug 'Centchroman', a non-steroidal oral contraceptive development which was first sold by the name of 'Saheli' and then 'Chhaya'.

CDRI spokesperson Sanjeev Yadav said during the Covid-19 pandemic, there was an 81% increase in distribution

CDRI celebrates World Contraception Day

of the weekly contraceptive 'Chhaya' in UP and it is available at all the PHCs and CHCs. Speaking on the occasion, director TK Kundu congratulated all the scientists involved in its development and encouraged scientists for future commitment in the area.

Yadav said NHM official

Dr Heera Lal had recently stated in a webinar that the demand for non-invasive family planning methods such as condoms, oral pills, emergency contraceptive pills had seen a rise with an 81% increase in distribution of 'Chhaya'.

CDRI had started working

on oral contraceptives way back in 1960 under the Union Ministry of Health and Family Welfare to promote family planning of new India, largely post-independence era.

"In 1960, USA FDA approved steroidal-based oral contraceptive agents, but steroidal contraceptive comes

with noticeable side-effects; hence, CDRI was searching for non-steroidal contraceptives with minimal to no side-effects," Yadav said.

In this order, the parent compound called benzofuran was synthesised with an anti-fertility activity, a primitive contraception stage for women, which hinders the fertilised egg implantation process.

Published in:
The Pioneer

विश्व गर्भ निरोधक दिवस की पूर्व संध्या पर सीडीआरआई व सीएफएआर का वेबिनार

81% बढ़ी गर्भ निरोधक छाया की मांग

माई मिटी रिपोर्टर

लखनऊ। कोरोना महामारी के बीच मैटल ड्रग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीडीआरआई) की बनाई गर्भ निरोधक टैबलेट छाया की मांग 81 प्रतिशत अधिक बढ़ गई। इस दौरान दूसरे गर्भ निरोधक उपायों में भी मांग बढ़ी है। वहीं सीडीआरआई की बनाई इस दवा ने अपने 30 साल भी पूरे कर लिए हैं। छाया पहले स्टेली के ब्रांड नाम से सरकारी और गैर सरकारी माध्यमों से महिलाओं के उपयोग के लिए मौजूद थी।

शुरुआत को यह जानकारी विश्व गर्भ निरोधक दिवस की पूर्व संध्या पर आयोजित एक वेबिनार में नेशनल हेल्थ मिशन के अतिरिक्त मिशन निदेशक डॉ. हीरा लाल ने दी। यह वेबिनार सीडीआरआई और सीएफएआर ने आयोजित किया। डॉ. हीरा लाल ने बताया कि अंकड़े बताते हैं कि सज्जी रहित परिवार नियोजन विधियों जैसे कि कंडोम, भौतिक गैलियां, आपातकालीन गर्भनिरोधक गैलियों की मांग में वर्तमान में वृद्धि देखी गई है। स्वास्थ्यिक गर्भ निरोधक गोली छाया के ही वितरण में 81% की वृद्धि दर्ज की गई है। सीडीआरआई के निदेशक डॉ. जयस कुंद ने बताया कि हमारे वैज्ञानिकों ने स्टेली के रूप में इस दवा सेंट क्रोशन को बनाया था। 1990 में इसका उपयोग देश की पहली नॉन स्टेरॉयड गर्भ निरोधक दवा के रूप में हुआ। स्टेरॉयड दवा से महिलाओं को होने वाली कई दिक्कतों को खत्म किया जा सका। 30 साल तक दवा के सकल बने रहने और अब छाया के नाम से नेशनल हेल्थ मिशन का डिस्का बनने पर वैज्ञानिकों को उन्होंने बधाई भी दी।



सीडीआरआई व सीएफएआर के वेबिनार में मौजूद विशेषज्ञ।

इसलिए मनाया जाता है विश्व गर्भनिरोधक दिवस

दुनिया मानव गतिविधियों के कारण जलवायु परिवर्तन के दुर्दैवपूर्ण घूम रही है। वहीं, जनसंख्या विस्फोट जैसी स्थिति को बुराया दे चुकी है। समाज में जागरूकता फैलाने के लिए 2007 में विश्व गर्भ निरोधक दिवस हर साल 26 सितंबर को मनाया जाता है।

आईआईटीआर मनाएगा सीएसआईआर का स्थापना दिवस

शनिवार को इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी रिसर्च सीएसआईआर का स्थापना दिवस मनाएगा। इस दौरान एक वेबिनार का आयोजन किया गया है। इसमें जी मोक्ष चर्मा के मोड़ो डॉ. संजय सिंह मुख्य वक्ता होंगे। निदेशक डॉ. आनंद भवन ने बताया कि दोषदर तीन बजे से यह वेबिनार एचएस टीएम पर लाइव होगा।

डॉ. कुंद ने बताया कि भारत की स्वतंत्रता के बाद देश में परिवार नियोजन को बढ़ावा देने के लिए सीडीआरआई ने 1960 में मूख से लिए जाने वाले (ओरल) गर्भनिरोधकों पर काम करना शुरू कर दिया था। 1995 में सामाजिक विप्लव के लिए राष्ट्रीय परिवार कल्याण कार्यक्रम में और 2016 के दौरान ओम्नीके के रूप में शामिल किया गया। यह बाजार में स्टेली के रूप में उपलब्ध है। सरकारी मोल्चमो एवं पोल्चमो पर छाया के नाम से मुफ्त में उपलब्ध है।

गर्भ निरोधक साधनों से काम हो सकती है मातृ व शिशु मृत्यु दर : डॉ. हीरा लाल ने बताया कि गर्भ निरोधक साधनों को अपनाकर

जहां महिलाओं के स्वास्थ्य को बेहतर बनाया जा सकता है। वहीं, मातृ एवं शिशु मृत्यु दर को भी कम किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि गर्भनिरोधकों को पहले बच्चे की योजना सादी के कम से कम दो साल बाद बनाने चाहिए।

13 जिलों में पूरे अकनूबर चलेगा विशेष अभियान : प्रदेश के 13 जिलों में एक से 31 अकनूबर तक दो गज की दूरी, मास्क और परिवार नियोजन है जरूरी अभियान चलाया जाएगा। यह अभियान आगरा, अलीगढ़, एटा, इटावा, फतेहपुर फिरोजाबाद, हाथरस, कानपुर नगर, कानपुर देहात, मेनपुरी, मधुवा, रायबरेली और रामपुर जिले में चलाया जाएगा।

सीएसआइआर तैयार कर रहा कोरोना वायरस की कुंडली

रुमा सिन्हा, लखनऊ

वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआइआर) कोरोना वायरस की कुंडली तैयार करने में जुटा है। सीएसआइआर की देश में मौजूद सभी 38 प्रयोगशालाएं फीनोम प्रोजेक्ट के तहत इसमें सहयोग कर रही हैं। इसके तहत किए जा रहे सीरो सर्वे में अलग-अलग जगहों पर वायरस की प्रकृति को देखा जाएगा। साथ ही कोविड-19 संक्रमण के बाद शरीर में एंटीबॉडी कितने दिन मौजूद रहती है, इसका भी पता लगाया जाएगा।

सीएसआइआर की लखनऊ स्थित प्रयोगशालाओं सीडीआरआई, एनबीआरआई, आइआईटीआर और सीमैप के वैज्ञानिकों-कर्मचारियों के ब्लड सैंपल एकत्र कर दिल्ली स्थित सीएसआइआर की आइजीआईबी लैब भेजे जा चुके हैं। इसके अलावा देश के अलग-अलग हिस्सों में

अध्ययन से कोरोना वैक्सीन की डोज तय करने में मिलेगी मदद

मौजूद अन्य प्रयोगशालाओं से भी सैंपल भेजे जा रहे हैं। सीरोलॉजिकल सर्वे के बारे में सीडीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. संजीव यादव बताते हैं कि वैक्सीनेशन प्रोग्राम के लिए यह पता लगाया जाना बेहद जरूरी है कि कोरोना इन्फेक्शन के बाद एंटीबॉडी कितने दिन तक शरीर में मौजूद रहती है। साथ ही एंटीबॉडी टाइटर (एंटी बॉडी की इकाई) कितना होता है। विस्तृत अध्ययन के जरिये इसका पता लगाया जाएगा। डॉ. यादव बताते हैं कि फीनोम इंडिया प्रोजेक्ट में वायरस सीक्वेंसिंग स्टडीज के परिणामों का भी उपयोग किया जा रहा है। इससे वायरस की प्रकृति का अनुमान लग सकेगा। कितने फीसद लोग अभी तक संक्रमित हो चुके हैं, इसका भी आकलन हो सकेगा।

Please Follow/Subscribe CSIR Social Media Handles



[CSIR INDIA](#)



[CSIR_IND](#)



[CSIR India](#)